

अमरकान्त की कहानी

“ हत्यारे ”

प्रदर्शन पटकथा : संजय श्रीवास्तव

निर्देशन : बंसी कौल

प्रथम दृश्य

एक पान की दुकान जिसके साथ लगा हुआ एक बुक स्टॉल दोनों के बीच मालिक के बैठने की जगह। पानवाला दुकान की साफ-सफाई कर रहा है तभी दो युवक वहां आते हैं दोनों ही छात्र हैं कालेज के।

पहला युवक पान वाले से। एक सिगरेट एक दुसरे युवक से। एक से ही काम चलेगा या तुम्हारे लिये दूसरी लूँ।

दूसरा युवक दो ही ले लो, एक बाद में सुलगा लेंगे। और बुक स्टाल से अखबार उठाकर देखने लगता है।

पहला युवक ओ.के., क्या छपा है अखबार में।

दूसरा युवक कुछ नहीं यार एक ही तरह की खबरे, सरकारी योजनायें, चोरी चकारी, मार पीट और क्या। साला समझ में नहीं आता कि अखबार आज का है या कल का। अब ये देखों भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, खेती की जमीनों पर मकान बनाये जा रहे हैं और किसान आगे बढ़कर जमीने बेच रहे हैं। सरकार कृषि योजनायें बना रही है, और दूसरी तरफ जमीनों का अधिग्रहण कर रही है।

पहला युवक तुमसे किसने कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान है ? कहने से कुछ नहीं होता भैया, अब बताओ हमारे देश को सोने की चिड़िया भी कहा जाता था। पर मुझे तो आज तक एक पंख भी सुनहरा नहीं दिखा पान वाला ध्यान से उनकी बातें सुनता है।

दूसरा युवक हाँ यार सही कहते हो।

पहला युवक अब हमारा देश कृषि प्रधान नहीं रहा बल्कि, नेता प्रधान हो गया है, बेटा जितनी शहर की गलियां है ना उससे 10 गुना शहर में नेता है और ये हाल तो पूरे शे का है अब बता हुआ ना हमारा देश नेता प्रधान और नेता ही क्यों, पार्टी देख कितनी है एक स्टेट में इतनी पार्टी है कि पूरी दुनिया के सारे देशों में मिलाकर भी उतनी पार्टी नहीं होगी।

दूसरा युवक फिर तो बेटा घोटाला, प्रधान, भ्रष्टाचार प्रशान, बलातकार प्रधान मतलब तो हमारा देश प्रधानता प्रधान हो गया है।

दोनों हसते हैं और चले जाते हैं।

पान वाला देखा आपने ये दो लोग क्या और कैसी बातें कर गये, मैं ये नहीं समझ पा रहा हूँ कि ये कहना क्या चाहते थे, ये हमारी दशा हमारी सारी प्रक्रिया के लिये गंभीरता से बातें कर रहे थे या फिर युंही वक्त गुजार रहे थे, बिना किसी मकसद के।

मैं किशनलाल ये पान की दुकान मेरे दादा के समय से और मैं यहा बचपन से आ रहा हूँ, घर की परिस्थिति के कारण मैं ज्यादा पढ़ नहीं सका सिर्फ स्कूल तक। कालेज जाना चाहता था पर यहाँ पान की दुकान पर आ गया। मैं ज्यादा पढ़ तो नहीं सका पर पढ़ने का शौक हमेशा रहा। इसलिये पान की दुकान के साथ ये किताबों की दुकान शुरू कर दी। हाँ कम पढ़ने के कारण शायद मेरा बौद्धिक स्तर बहुत ऊंचा न हे पर यहां हर तरह के लोग आते रहते हैं और वो जिस तरह से बातें करते हैं मैं कई बार मानसिक रूप से प्रताड़ित होता हूँ। जब लोग ऐसी बातें करते हैं तो मुझे लगता है कि मेरी हत्या की जा रही है, ये लोग सिर्फ बातों से ही मार देना चाहते हैं और ये मानसिक हत्यारे हर समय मौजूद रहे, हर क्षेत्र में मौजूद रहे हैं। कई साल पहले भी मुझे ऐसी बातें सुनने को मिली थी, जब मैंने सोचा कि शायद छोटा हूँ, इसलिये इन्हें समझ नहीं पा रहा हूँ। पर नहीं स्थिति वहीं की वहीं है। सिर्फ बातें करने वाले बदले हैं हालत और बातें नहीं।

ये देखिये कई साल पहले। **पान वाला फ्रिज होता है उसकी जगह एक छोट लड़का बैठा है, दो युवक आते है।**

युवक—1

हेलो डियर

2 हेलो इतना लेट कैसे हो गये बेटे।

1 अरे यार मैं तो बोर हो गया हूँ, हर बार वहीं बात।

2 कुछ खास ?

1 नहीं यार वहीं नेहरू आज उनका एक और पत्र मिला है।

2 आई सी, क्या लिखा है।

1 वही यार बहुत परेशान कर रहा है मुझे, मैं बार—बार कह रहा हूँ कि भाई साहब भारत की प्राइम मिनिस्ट्री किसी और व्यक्ति को दे दो, मेरे पास और भी बड़े—बड़े काम हैं, लेकिन मानते ही नहीं।

2 अब क्या कहते हैं।

1 वही पुराना राग, इस बार लिखते है कि मैं अब थक गया हूँ, गांधी जी देश का जो भार मुझे सौंप गये थे, उसकों मैं आपके मजबूत कंधो पर रखना चाहता हूँ। इस अभागे देश में आज आपसे काबिल और समझदार दूसरा कोई नहीं है।

2 **गंभीरता से।** और भी तो नेता हैं ?

1 अरे यार सबके सब बातूनी और निकम्मे, तुमकों तो मालुम है ना जब लास्ट टाईम मैं दिल्ली गया था तो नेहरू जी ने अशोका होटल में आकर मुझसे मुलाकात की थी।

2 नहीं मालुम, तुम साले हरामी औलाद हो कोई बात बताते भी तो नही हो।

1 यार क्या बताता, वो होटल में आये और मेरा हाथ पकड़ कर बोले, देश आज भारी संकट से गुजर रहा है, सभी नेता और मंत्री बेईमान और संकीर्ण विचारों के है, जो ईमानदार है, उनके पास अपना दिमाग नहीं है, मेरी लीडरशिप कमजोर हो रही है। अफसर धोखा दे है। जनता की भलाई के लिये मैंने पांच साला योजनायें शुरू की, लेकिन ब्लाकों के सरकारी कर्मचारी अपने घरों को भरने में लगे हैं, मैं जानता हूँ कि सारे देश में कुछ लोग लूट खसोर मचाये हुये है। लेकिन मैं उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं कर पा रहा हूँ। **दुसरे युवक से किसी से कहना मत साले।** फिर कहते लगे देश को आज केवल आपका ही सहारा है। आप ही पूंजीपतियों मंत्रियों और अफसरों के षडयंत्र को खत्म करके समाजवाद कायम कर सकते हैं।

2 तो अब तुमने क्या सोचा है ?

1 ऐसे छोटे—मोटे काम माबदौलत नहीं करते।

2 पर यार देश की खातिर तुमको कुछ तो झुकना चाहिये।

1 नहीं यार मैं सिद्धांतों वाला आदमी हूँ। अभी नेहरू को ट्रंककॉल कर के आ रहा हूँ, इसलिये तो देर हुई।

2 अच्छा क्या लिख दिया।

1 साफ—साफ लिख दिया, भैया देश की प्राइम मिनिस्ट्री आपको ही मुबारक हो, मुझे मंजूर नहीं है मेरे सामने बड़े—बड़े सवाल हैं, सबसे पहले मुझे विश्वशांति कायम करती है।

फिर गंभीर स्वर में दुसरे युवक से। पर तुम कहां व्यस्त थे।

2 अरे कहीं नहीं याद कल मुझे कल अमेरिका के प्रेसीडेन्ट केनेडी का तार मिला है।

1 क्या लिखा है।

2 अरे वही अमेरिका बुला रहा है, लिखता है आत जैसा साहसी व्यक्ति आज संसार में दूसरा नहीं है। आप यहां आ जायेंगे तो अमेरिका निश्चित रूप से रूस को युद्ध में हरा देगा।

1 तुमने कोई जवाब दिया।

2 हाँ मैंने केबल कर दिया कि मैं राष्ट्रीय विचारों का युवक हूँ और इस घोर संकट के समय किसी भी हालत में अपने देश को छोड़कर नहीं जाऊंगा।

- 1 अच्छा किया। वैसे वो शख्स है बहुत सीधा सादा मेरी बड़ी इज्जत करता है। पिछली बार जब मिला था तब मैंने उससे तुम्हारी सिफारिश कर दी थी।

दूसरा दृश्य

दोनों युवक बुक स्टॉल की तरफ जाते हैं क्योंकि वहाँ अभी-अभी एक सुन्दर महिला पहुँची है और किताबें उलट रही हैं। दोनों युवक किताबें कम और उसकी ओर ज्यादा देख रहे हैं और युवती भी इसी भाव से किताबें देख रही है कि लो उसे आधुनिका और प्रबुद्ध समझे।

- 1 किताबें उलटते हुये। यार ये लास्की भी अजीब आदमी था।
2 क्यों, क्या हुआ ?
1 तुमको जानते ही होना कि “ ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स लिखने से पहले वो मुझसे मिलने आया था।
2 हाँ कुछ याद आता है। औरत दोनों को घूरती है।
1 एक रात वो चुपके से मेरे घर पहुँचा। गिड़गिड़ाकर बोला जब तक आप मेरी मदद नहीं करेंगे मेरी किताब नहीं लिखी जायेगी। मुझे दया आ गई कि इस भले आदमी के लिये कुछ कर देना चाहिये। मैंने कहा भाई मेरे पास इतना समय तो नहीं कि तुम्हारे लिये पूरी किताब लिख दूँ, हाँ रोज रात में मैं दो घण्टे बोल दिया करूँगा और तुम नोट कर लेना।
2 वो तैयार हुआ।
1 अरे बड़ा खुश हुआ, मैंने दिन में ही पूरी किताब डिक्टेट कर दी। वो कहने लगा कि पुस्तक के असली लेखक आप ही हैं और उस पर आपका ही नाम जाना चाहिये। लेकिन मैंने कहा मैं सत्य और अहिंसा के देशका रहले वाला हूँ और मेरी सेवाये सदा निस्वार्थ होती है। दोनों हस पड़ते हैं।

युवती किताब के पैसे देकर उन्हें घूरती हुई चली जाती है। युवक भी उसके पीछे-पीछे निकल जाते हैं।

- पान वाला उस युवति ने जाते समय जिस तिरस्कार पूर्ण ढंड से उनको देखा था, वो मुझे आज भी याद है। मैं उन युवकों से कहना चाहता था पर छोटा था हिम्मत ही नहीं हुई। पर ये जरूर सोचता रहा कि उनकी कहीं बातों का अर्थ क्या था। क्या सचमुच किसी देश का प्रधान मंत्री ऐसा सोचता होगा, किसी की ओर सहायता के लिये ताकत होगा, ये महज उन दो युवकों की बातें हैं या सचमुच ऐसा होता होगा। क्या सचमुच कोई लेखक किसी की सहायता लेता होगा। पर कुछ भी हो। उनकी बे सिर-पैर की बातों से मुझे कभी कभी खीज होती थी तो कभी लोगो के साथ मैं उनका मजा लेता था। मुझे एक बार की बात और याद आई। वही शाम का समय था दोनो फिर मेरी दुकान पर थे।

दोनों युवक आते हैं, सिगरेट खरीदते हैं और फिर से किताबों की दुकान के सामने की बेंच पर बैठ जाते हैं आती-जाती लड़कियों को देखकर कुछ बोलते जाते हैं। सीटी बजा देते हैं। और युवतियाँ भी उन्हें कोई उत्तर देती जाती हैं। तभी भीड़ से हटकर एक लड़की बस से उतर कर पैदल सकड़ के दूसरी तरफ से निकलती है। उसे देखकर एक युवक गंभीर हो जाता है। दूसरा उसे चुप देखकर पूछता है :

- 1 क्यों क्या हुआ ?
2 कुछनहीं उस लौडिया को देख रहे हो। उसे पहचानते हो।
1 नहीं कौन है।
2 तुम साले गधे हो, मैं प्रधान मंत्री बनूँगा तो तुम्हे सेक्रेट्रियेट का भंगी बनाऊँगा। बेटे चन्दा सिन्हा है। एम.ए.इंगलिश टॉप करके अब रिसर्च कर रही है ओर मुझे अपना पति मान चुकी है।
1 या पुत्र ?

- 2 मजाक नहीं डियर, कई बार चरण पकड़ के रो चुकी है। लेकिन तुम तो जानते हो कि मैं बालब्रम्हचारी रहने की प्रतिज्ञा कर चुका हूँ।
- 1 तुम्हारे बाप भी तो बालब्रम्हचारी ही थे।
- 2 यार तुम हर बात को नान सीरियस बना देते हो। मैं देश की कोटि-कोटि जनता के कल्याण के लिये अपील करता हूँ कि तुम गंभीर बनो और अनुशासन में रहो।
- 1 अच्छा फरमाइये, हूजूर शहंशाह हरामी उल मुल्क।
- 2 एक रोज प्रोफेसर दीक्षित मेरे पास आकर गिड़गिड़ाने लगे।
- 1 इंगलिश डिपार्टमेंट के हेड ?
- 2 हॉ बे और कौन प्रोफेसर दीक्षित है इस अखिल विश्व में।
- 1 गलती हुई सरकार।
- 2 **आते ही हाथ जोड़कर बोले** — इस संसार में आप ही मेरी मदद कर सकते हैं। चन्द्रा सिन्हा के बिना मैं एक पल भी जिन्दा नहीं रह सकता, वो मामूली स्टूडेंट थी, लेकिन मैंने ही उसको टाप कराया है, मैं कई बार कह चुका हूँ कि तुमको दो वर्ष में में डाक्टरेट दिला दूंगा। मैंने हर दर्जे के लिये पाठ्य पुस्तकें और कुंजिया लिखकर जो लाखों कमाये है, उनको चवन्द्रा के चरणों में न्योछावार करने को तैयार हूँ, लेकिन वो तो मेरी ओर देखती भी नहीं है वो तो बस आपके ही नाम की माला जपती है। आप समझा देंगे तो कहना मान जायेगी।
- 1 तुम तो बेटा डर गये होगे ? तुम्हारा एक पीरियड वो लेता है।
- 2 तुमसे अभी कहा है कि गंभीर बनो पर बात में मजाक, सोचो सारा देश जिसकी पूजा करता हो, वो उस पिद्दी से डरेगा ? **मैंने डांट कर** उससे पूछा बच्चू पाठ्य पुस्तकों का बहुत रोब दिखाते हो, लेकिन क्या तुम इस बात से इन्कार कर सकते हो कि तुम्हारी सभी पुस्तकें तुम्हारे शिष्यों की लिखी हुई हैं ?
- 1 फिर क्या बोले सर ?
- 2 बोलता क्या ? थर-थर कांपने लगा चरण पकड़ लिये मेरे और प्रार्थना करने लगा कि मैं ये बात किसी से न कहूँ मैंने कहा मैं जानता हूँ कि तुम बड़े-बड़े अफसरों और मंत्रियों की चापलूसी करते हो, तुमने अनगिनत लड़कियों की जिन्दगी इसी तरह चौपट की है। चन्द्रा सती साध्वी नारी है, अगर आइंदा तुमने उसको बुरी नजर से देखा तो मुझे बाध्य होकर देश की शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन करना पड़ेगा।
- पान वाला फिर दोनों उठ कर इधर-उधर घुमने लगे फिर सामने वाले बार में चले गये बार से निकले और फिर मेरी दुकान पर आकर खड़े हो गये। इस समय दोनो जरूरत से ज्यादा गंभीर थे, मैं सोच रहा था कि अब ये क्या करने वाले हैं क्योंकि बार से निकले वाला अक्सर अपने होश में नहीं होता है। पर ये दोनों पहले से ज्यादा गंभीर थे। तभी 1 युवक बोला।
- 2 साले तुम कायर हो, तुमने अपनी शराब मेरे गिलास में क्यों डाली ? मैंने सोचा था कि प्राईम मिनिस्टर होने पर मैं तुम्हें भ्रष्टाचार निवारण समिति और जाति भेद उन्मूलन समिति का अध्यक्ष बना दूंगा, लेकिन जब तुम इतनी पी नही सकते तो अवसर आने पर घूस कैसे लोगे, जालसाजी कैसे करोगे कैसे झूठ बोल पाओगे, और फिर इन सबके बिना क्या खाक देश की सेवा करोगे।
- फिर दोनो ने सिगरेट सुलगा ली।**
- 1 डियर हम काफी विदेश भ्रमण कर चुके हैं, अब हमें हमारे प्यारे स्वदेश की भी सुध लेनी चाहिये।
- 2 हॉ यार मेरी भी पवित्र आत्मा स्वदेश के लिये छटपटा रही है।
- 1 लेट्स गो।
- दोनों चले जाते हैं।**
- दोनों युवक एक बत्ती में पहुंचते हैं, वहां बैठी एक औरत के पास जाते हैं।**
- औरत आईये बहुत दिनों बाद दरसन दिया।

1 आज तुम्हारी सेवा में विश्व के एक महान नेता को लाया हूँ।
औरत मुझे तो आपकी बात समझ में नहीं आती कौन है ये ?
1 ये अखिल विश्व लोफर संघ के अध्यक्ष है, इनको हर तहर से तुम्हें खुश करना है।
औरत मेरे लिये तो सब बराबर है।
1 तुम्हारा दो पाया जानवर कहां है ?
औरत कहीं गया होगा घास चरने।
1 तो देर क्या है ?
औरत कुछ नहीं।
तीनों अन्दर चले जाते हैं,। थोड़ी देर बार फेड इन में।
1 दो दो रुपये हुये ना ?
औरत नहीं चार-चार लूंगी, बड़ा परेशान किया है आप लोगो ने।
1 तुम तो पूंजी पति हो, तुम्हें किस बात की कमी है। आठ-आठ आना और दस कर नोट है।
औरत छुट्टे रुपये मेरे पास नहीं है।
1 पान वाले से ले आते हैं।
औरत लाईये मैं ला देती हूँ।
1 अरे तुम देश की महान कार्यकर्ता हो, कहा कष्ट करोगी अभी आते हैं।
औरत अच्छी बात है।
दोनों आगे बढ़ते हैं।
1 साले जूते निकाल कर हाथ में रख ले।
2 क्यों ?
1 मेरे आदेश का चुपचाप पालन कर, आज समय आ गया है कि हमारे नवयुवक बुद्धिमानी, मौलिकता, साहस और कर्मठता से काम ले, मैं पूर्ण अहिंसात्मक तरीके से उनका पथ प्रदर्शन करना चाहता हूँ। भाग साले आर्थिक और सामाजिक क्रांती करने का समय आ गया है।
दोनों भागते हैं। औरत उनको देखकर रोती चिल्लाती है।
औरत अरे लूट लिया हरामी के पिल्लों ने उन पर बज्जर गिरे।
कुछ लोग आस-पास से निकल कर उनके पीछे भागते हैं, तभी एक युवक रुकता है चाकू निकालता है और भीड़ में सबसे आगे आने वाले आदमी को मार देता है। सारी भीड़ वही थम जाती है और दोनों युवक फिर से दोड़कर निकल जाते हैं।
पानवाला और करीब एक हफ्ते बाद मुझे ये सारी बातें पता चली क्योंकि वो दोनों युवक मेरी दुकान पर नहीं आये तो मैंने किसी से पुछा और मुझे पता चला। मैं सोच में डूब गया जिन्हें मैं मानसिक हत्यारा समझता था, वो तो सचमुच के हत्यारे निकले, मैं आज तक ये नहीं समझ पाया कि वो लोग दुनिया जहान की बातें करते मुझे और और लोगो को मानसिक रूप से मारते थे, वो सही था या उनके द्वारा सचमुच किसी आदमी की हत्या कर देना। पर एक बात तो तय है वो थे हत्यारे ही।